

DR. MOHAMMAD HANIF KHAN SHASTRI

Dr. Mohammad Hanif Khan Shastri is a great Sanskrit scholar. He has a depth knowledge of all four Vedas , Shrimad Bhagwad Geeta, all Puran Upnishad and Holy Quraan; His books have been bringing Hindu and Muslim beliefs together by actively upholding their consonance.

2. Born on September 21, 1951 in Duddhi Sonebhadra, Uttar Pradesh, Dr. Hanif Khan Shastri received Bachelor Degree from Rajkiya Mahavidyalay in town of Duddhi. He completed his Master of Arts in Sanskrit from Kashi Vidyapeeth and also done Acharya in Puran from Kameshwar Singh Darbhanga Bihar Sanskrit University. He did his PhD on Mahamantra Gaytri Aur Surah Fatiha Ka Earth Prayog Evam Mahatmya Ki Drishti Se Tulnatmak Adhyayan with special reference to Hinduism and Islamic thoughts of spiritual depth. He also obtained Adeeb Kamil Urdu from Jamia Urdu Aligarh.

3. Dr. Hanif Khan Shastri is a retired professor. During his service, he trained thousand of Sanskrit students and also taught Sanskrit language in various madarsa at Delhi and Uttar Pradesh. As a visiting professor, he taught Sanskrit in Kabul University in Afghanistan.

4. Dr. Hanif Khan Shastri has endeavored and tried to promote communal harmony by highlighting similarities between Hindu and Muslim religion through his unique literary contribution in Hindi, Sanskrit, Urdu, Arbi and Farsi. He is working to promote Shreemad Bhagwad Geeta Gyan since 1985 and gives many lectures on shlokas of Geeta and mantras of vaidik, Upnishad and Purana, special reference to promote similarities between Geeta and Quran .

5. Dr. Hanif Khan Shastri received various awards such as the National Communal Harmony Award in individual category for the year 2009, International Award by International Yog Confederation, Sri Chandra Sekarendra Saraswati National Eminence Award in 2011 by Kanchi Kam Koti Peethadheesh Swami Shankaracharya Jayendra Saraswati, Vidwat Samman from Vice Chancellor of Rashtriya Sanskrit Sansthan In 2011, he was honoured by Vice President of India for his book entitled Vedo Mein Manav Adhihikar in 2000, Awarded by Uttar Pradesh Hindi Sansthan for book entitled Mahamantra Gayatri ka Bauddhik Upyog , Sarjana Award for the book entitled Mohan Geeta , Sanskrit Sahitya Puraskar by Uttar Pradesh Sanskrit Sansthan 2002, National Award by President of India for book entitled Geeta Evam Quran Mein Samanjasy in 1995, Vedang Vidwan Samman from Maharishi Sandipani Rashtriya Ved Vidyapratishthan Ujjain by Dr. Murli Manohar Joshi, Dara Shikoh Award from Akhil Bhartiya Vidwat Parishad Varanasi in 2012 and Shiksha Samman by Bhartiya Adhyapak Parishad 2015.

पद्म श्री

डॉ. मोहम्मद हनीफ ख़ान शास्त्री



डॉ. मोहम्मद हनीफ ख़ान शास्त्री संस्कृत के एक प्रकाण्ड विद्वान हैं। आपको चारों वेदों, श्रीमद् भगवद्गीता, सभी पुराण, उपनिषद् एवं पवित्र कुरान का विशद् ज्ञान है। इसके साथ-साथ आपकी सभी पुस्तकों में हिन्दू एवं मुस्लिम मान्यताओं में सक्रिय रूप से तालमेल को बरकरार रखते हुए सामंजस्य स्थापित किया गया है।

2. आपका जन्म 21 सितम्बर, 1951 में दूद्धी सोनभद्र, उत्तर प्रदेश में हुआ था। आपने दूद्धी कस्बे में स्थित राजकीय महाविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। आपने काशी विद्यापीठ से संस्कृत में कला स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की और कामेश्वर सिंह दरभंगा बिहार संस्कृत विश्वविद्यालय से पुराण में आचार्य की उपाधि प्राप्त की तथा इसके साथ-साथ गायत्री महामंत्र और सुराह फतीहा का अर्थ प्रयोग एवं महात्म्य की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन विषय में अपनी पीएच. डी. की जिसमें आपने हिन्दूवाद तथा इस्लाम के आध्यात्मिक मर्म संबंधी विचारों का विशेष रूप से संदर्भ दिया है। आपने जामिया उर्दू अलीगढ़ से अदीब कामिल उर्दू की उपाधि प्राप्त की।

3. डॉ. हनीफ एक सेवानिवृत्त प्रोफेसर हैं। अपने सेवा काल के दौरान आपने हजारों संस्कृत विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया तथा दिल्ली एवं उत्तर प्रदेश के विभिन्न मदरसों में संस्कृत भाषा भी पढ़ाई। विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में आपने अफगानिस्तान में काबुल यूनिवर्सिटी में संस्कृत का अध्यापन कार्य किया है।

4. आपने हिंदी, संस्कृत, उर्दू, अरबी, फारसी में अपने अतुलनीय योगदान के माध्यम से हिंदू एवं मुस्लिम धर्मों के बीच समानताओं को उजागर करके सामुदायिक सौहार्द को बढ़ावा देने का अथक प्रयास किया है। आप वर्ष 1985 से श्रीमद् भगवद् गीता ज्ञान का प्रसार करने में अनवरत लगे हुए हैं और आपने गीता के श्लोकों तथा वैदिक मंत्रों, उपनिषद् एवं पुराणों पर अनेक आख्यान दिए हैं जिनमें गीता तथा कुरान के बीच समानताओं का प्रचार-प्रसार करने के लिए आपके द्वारा विशेष संदर्भ दिए गए हैं।

5. आपको अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिनमें वर्ष 2009 में एकल श्रेणी में प्रदान किया गया नेशनल कम्युनल हार्मनी अवार्ड, अंतर्राष्ट्रीय योग संघ द्वारा प्रदत्त अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार, वर्ष 2011 में कांची काम कोटि मठाधीश स्वामी शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती द्वारा प्रदान किया गया श्रीचंद्र शेखरेन्द्र सरस्वती नेशनल एमीनेंस अवार्ड, वर्ष 2011 में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के उप कुलपति की ओर से प्रदान किया गया विद्वत सम्मान शामिल है। आपको वर्ष 2000 में आपकी पुस्तक "वेदों में मानव अधिकार" के लिए भारत के उप-राष्ट्रपति श्री कृष्ण कांत द्वारा सम्मानित किया गया तथा आपकी पुस्तक "गायत्री महामंत्र का बौद्धिक उपयोग" के लिए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा सम्मानित किया गया। इसके अलावा, आपको आपकी पुस्तक मोहन गीता के लिए सर्जना पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया और उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा आपको संस्कृत साहित्य पुरस्कार से वर्ष 2002 में विभूषित किया गया। वर्ष 1995 में आपको भारत के राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा की ओर से आपकी पुस्तक गीता एवं कुरान में सामंजस्य के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अलावा, आपको डॉ. मुरली मनोहर जोशी द्वारा महर्षि संदीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन की ओर से वेदांग विद्यान सम्मान से सम्मानित किया गया तथा वर्ष 2012 में आपको अखिल भारतीय विद्वत परिषद, वाराणसी की ओर से दारा शिकोह पुरस्कार प्रदान किया गया। आपको वर्ष 2015 में भारतीय अध्यापक परिषद की ओर से शिक्षा सम्मान से भी नवाजा गया है।